



13 May, 2024

भारत में ऑरोरा लाइट्स

संदर्भ: विगत 10-11 मई की मध्य रात्रि को लद्दाख के साफ आसमान में लाल रंग की ऑरोरा लाइट्स देखी गई थी।

➤ लद्दाख में ऑरोरा के दृश्य:

- भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान, बेंगलुरु (IIA) ने, लद्दाख के हानले में भारतीय खगोलीय वेधशाला (IAO) के चारों ओर स्थित ऑल-स्काई कैमरों का उपयोग करके इस ऑरोरा दृश्य को कैचर किया।
- IIA के स्वामित्व वाली और उसके द्वारा संचालित IAO में ऐसे कैमरे लगे हैं जो लगातार आकाश की तस्वीरें लेने में सक्षम हैं।
- ऑरोरा गतिविधि पहली आधी रात से लेकर शनिवार की शाम के समय तक बनी रही, जो सुबह 2 बजे चरम पर थी।
- लद्दाख के हानले में IAO के ठीक ऊपर आसमान में इस लाल ऑरोरा लाइट्स की छवि देखी गई।

➤ ऑरोरा क्या है ?

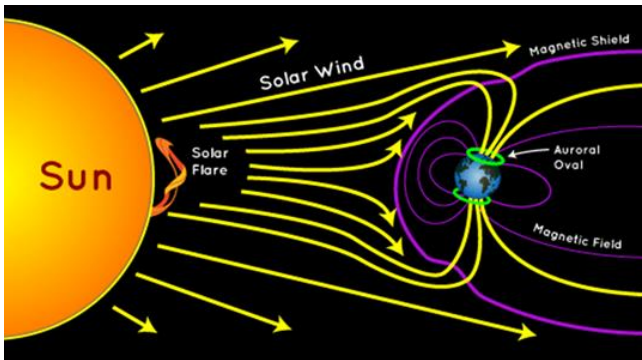
- ऑरोरा अंतरिक्ष में आवेशित सौर हवाओं और पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र के बीच होनेवाली परस्पर क्रिया का परिणाम है।
- इस दौरान आवेशित कणों से बनी सौर हवाएँ पृथ्वी के ऊपरी वायुमंडल से टकराती हैं, जिससे प्रकाश उत्पन्न होता है।
- पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र, जो ध्रुवों पर सबसे मजबूत होता है, आमतौर पर पृथ्वी को सौर हवाओं से बचाता है।

➤ विस्तृत क्षेत्रों में ऑरोरा के कारण:

- शुक्रवार और शनिवार के बीच चार मजबूत सौर तूफानों सहित बढ़ी हुई सौर ज्वाला गतिविधि ऑरोरा का कारण बना।
- सूर्य के एक सक्रिय क्षेत्र से कोरोनल मास इजेक्शन (सीएमई) पृथ्वी पर पहुंचे, जिससे अंतरिक्ष का मौसम गड़बड़ा गया।
- जब उच्च गति से यात्रा करने वाले सौर ज्वालाएं पृथ्वी के वायुमंडल से टकराती हैं, परिणामतः कभी-कभी निचले अक्षांश क्षेत्रों में भी ऑरोरा दिखाई देते हैं।
- इसी तरह की तीव्रता वाले सौर तूफानों ने पहले नवंबर 2003 में पृथ्वी को प्रभावित किया था।

➤ सौर तूफानों का प्रभाव:

- निरंतर सौर तूफान निम्न पृथ्वी कक्षा (LEO) में उपग्रह संचालन के लिए खतरा उत्पन्न करते हैं।
- नेविगेशन, संचार और अन्य उद्देश्यों के लिए उपयोग किए जाने वाले उपग्रह सौर तूफानों के प्रति संवेदनशील हो सकते हैं।
- सौर तूफान अत्यधिक ऊर्जावान कण वातावरण बनाते हैं, जिससे ऊपरी वायुमंडल में गर्मी पैदा होती है और विकिरण के खतरे बढ़ जाते हैं।
- LEO में उपग्रहों पर अत्यधिक खिंचाव परिचालन संबंधी समस्याओं और चरम मामलों में उपग्रह विनाश का कारण बन सकता है।



आसियान-भारत वस्तु व्यापार समझौता (AITIGA)

संदर्भ: आसियान-भारत वस्तु व्यापार समझौते (AITIGA) की समीक्षा के लिए संयुक्त समिति की चौथी बैठक 7 मई से 9 मई, 2024 तक मलेशिया के पुत्रजया में सम्पन्न हुई।

➤ संयुक्त समिति की बैठकों की समीक्षा:

- समीक्षा प्रक्रिया के संचालन के लिए संयुक्त समिति अभी तक चार बार बैठक कर चुकी है।
- प्रारंभिक दो बैठकों में, समिति ने समीक्षा वार्ता के लिए संदर्भ की शर्तों और वार्ता संरचना को अंतिम रूप दिया था।
- 18-19 फरवरी, 2024 को नई दिल्ली में आयोजित तीसरी बैठक में AITIGA की समीक्षा के लिए वार्ता की शुरुआत की गई।

➤ उप-समितियाँ और चर्चाएँ:

- समीक्षा के दौरान समझौते के विभिन्न नीति क्षेत्रों को संबोधित करने के लिए अब तक आठ उप-समितियाँ स्थापित की गई हैं।
- वर्तमान में पाँच उप-समितियाँ ने चर्चाएँ शुरू कर दी हैं, जिनमें से सभी पाँचों ने अपने परिणामों की रिपोर्ट चौथी AITIGA संयुक्त समिति को दे दी है।
- इनमें से चार उप-समितियाँ, 'राष्ट्रीय उपचार और बाजार पहुँच', 'मूल के नियम', 'मानक, तकनीकी विनियम और अनुरूपता मूल्यांकन प्रक्रिया' और 'कानूनी और संस्थागत मुद्दे' पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मलेशिया के पुत्रजया में 4थी AITIGA संयुक्त समिति के साथ प्रत्यक्ष रूप से मिलीं।
- सैनिटरी और फाइटोसैनिटरी पर उप-समिति की बैठक संयुक्त समिति द्वारा दिए गए मार्गदर्शन के साथ 3 मई, 2024 को पहले हुई थी।

➤ AITIGA क्या है ?

- आसियान-भारत वस्तु व्यापार समझौता (AITIGA) वर्ष 2009 में भारत और दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ (ASEAN) के 10 सदस्य देशों के बीच हस्ताक्षरित एक मुक्त व्यापार समझौता (FTA) है।
- इसका प्राथमिक लक्ष्य दोनों क्षेत्रों के बीच वस्तुओं के व्यापार को उदार बनाना, आर्थिक वृद्धि और विकास को बढ़ावा देना है।

➤ AITIGA के उद्देश्य:

- भारत और आसियान देशों के बीच व्यापार किए जाने वाले अधिकांश वस्तुओं पर टैरिफ को कम करना और समाप्त करना।
- सीमा शुल्क प्रक्रियाओं को सरल बनाना, मानकों में सामंजस्य स्थापित करना, तथा व्यापार को सुविधाजनक बनाने के लिए पारदर्शिता बढ़ाना।
- वस्तुओं और सेवाओं के लिए बाजार पहुँच बढ़ाना।
- विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करना तथा क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देना।

➤ AITIGA की मुख्य विशेषताएँ:

- **टैरिफ कटौती:** AITIGA एक निश्चित समय-सीमा के भीतर 90% से अधिक व्यापारिक वस्तुओं पर टैरिफ में चरणबद्ध कटौती तथा अंततः उन्मूलन की रूपरेखा प्रस्तुत करता है।
- **गैर-टैरिफ बाधाएँ (NTBs):** यह समझौता तकनीकी विनियमन, स्वच्छता तथा फाइटोसैनिटरी उपायों, तथा सीमा शुल्क प्रक्रियाओं जैसे NTBs को संबोधित करता है, ताकि व्यापार प्रवाह को सुगम बनाया जा सके।
- **उत्पत्ति के नियम:** वस्तुओं की उत्पत्ति निर्धारित करने के लिए स्पष्ट नियम स्थापित किए गए हैं, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे अधिमानीय उपचार के लिए योग्य हैं।

Face to Face Centres





13 May, 2024

- **सुरक्षा उपाय:** घरेलू उद्योगों को अचानक आयात वृद्धि से बचाने के लिए प्रावधान किए गए हैं।
- **विवाद निपटान:** भारत तथा आसियान सदस्य देशों के बीच व्यापार विवादों को हल करने के लिए एक तंत्र उपलब्ध है।

सिकआउट्स

संदर्भ: कुछ हफ्तों के दौरान, दो भारतीय एयरलाइनों विस्तार और एयर इंडिया एक्सप्रेस को अपने परिचालन के लिए महत्वपूर्ण कुछ कर्मचारी क्षेत्रों के विरोध का सामना करना पड़ा।

➤ सिकआउट्स क्या है और हड़तालों से उनका अंतर:

- सिकआउट्स, जिसका शाब्दिक अर्थ बीमारी के बहाने श्रमिकों द्वारा काम से संगठित अनुपस्थिति है; कर्मचारियों द्वारा, मुख्य रूप से परिचालन भूमिकाओं में, संचालन को बाधित कर दिया जाता है। इसके साथ ही यह औपचारिक रूप से हड़ताल की घोषणा किए बिना काम बंद करने के लिए नियोजित औद्योगिक कार्रवाई का एक तरीका बन गया है।
- पारंपरिक हड़तालों के विपरीत, सिकआउट में बड़ी संख्या में श्रमिकों को बीमारी के आधार पर समन्वित छुट्टी लेने के लिए संगठित किया जाता है। प्रबंधन को अक्सर इसकी कम जानकारी होती है, जिससे शमन उपायों को प्रभावी ढंग से लागू करना मुश्किल हो जाता है।
- हालाँकि हड़ताल और सिकआउट दोनों परिस्थितियों में कर्मचारी शिकायतों और मांगों को संबोधित करने के लिए काम करने से इनकार करते हैं, हड़ताल आम तौर पर औपचारिक प्रक्रियाओं का पालन करती है, मान्यता प्राप्त यूनियनों को शामिल करती है और कानूनी प्रोटोकॉल का पालन करती है, जबकि सिकआउट अनौपचारिक और त्वरित कार्रवाई है।

➤ सिकआउट्स के बढ़ने में योगदान देने वाले कारक:

- हाल के वर्षों में सिकआउट्स कई बार हो गए हैं, विशेष रूप से औपचारिक हड़तालों की आवृत्ति में गिरावट आई है।

- वे सबसे प्रभावी होते हैं जब प्रमुख परिचालन भूमिकाओं में कर्मचारी भाग लेते हैं, जैसे पायलट, केबिन क्रू और इंजीनियरिंग कर्मचारी, जिनकी अनुपस्थिति कंपनी के संचालन को महत्वपूर्ण रूप से बाधित कर सकती है।
- सिकआउट्स को सीमित शिकायतों वाले विशिष्ट कर्मचारी श्रेणियों के लिए प्रभावी विरोध उपकरण के रूप में देखा जाता है, क्योंकि अन्य विभागों या सहकर्मियों से समर्थन जुटाना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।
- कार्रवाई की गुप्त प्रकृति, बीमारी के रूप में प्रच्छन्न होने के कारण आयोजकों और नेताओं की पहचान करना चुनौतीपूर्ण होने के कारण प्रबंधन को बीमार लोगों के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

➤ विमानन से परे विस्तार और प्रभाव:

- विभिन्न देशों में विभिन्न उद्योगों के उदाहरणों के साथ, विमानन क्षेत्र से परे भी बीमारियाँ देखी गई हैं।
- भारत में, विमानन जैसे क्षेत्रों में संकट की घटनाएं हुई हैं, जिनमें इंडिगो में विमान तकनीशियनों और केबिन क्रू और किंगफिशर एयरलाइंस के इंजीनियरों द्वारा विरोध प्रदर्शन शामिल हैं।
- सिकआउट्स विशिष्ट क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं हैं, क्योंकि इनका उपयोग विश्व स्तर पर विभिन्न उद्योगों में श्रमिकों द्वारा किया गया है, विशेष रूप से आवश्यक सेवाओं में जहां हड़ताल पर कानूनी बाधाएं लागू हो सकती हैं।
- इसके विभिन्न उदाहरणों में अमेरिका में अमेज़ॉन के कर्मचारियों द्वारा कोविड-19 महामारी के प्रति कंपनी की प्रतिक्रिया के बारे में चिंता और मुद्दों को उठाने वाले श्रमिकों के खिलाफ कथित दंडात्मक कार्रवाइयों के साथ-साथ डेट्रॉइट में खराब कामकाजी परिस्थितियों के विरोध में पब्लिक स्कूल के शिक्षकों द्वारा की गई कार्रवाई शामिल है।

NEWS IN BETWEEN THE LINES

केंद्रीय अधिकार प्राप्त समिति



हाल ही में, केंद्रीय अधिकार प्राप्त समिति (सीईसी) की एक रिपोर्ट ने सुप्रीम कोर्ट को सूचित किया कि पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील दिल्ली रिज क्षेत्र के 308 हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र पर अतिक्रमण किया गया है और अन्य 183 हेक्टेयर को "गैर-वानिकी उद्देश्यों" के लिए इस्तेमाल किया गया है।

केंद्रीय अधिकार प्राप्त समिति के बारे में:

- केंद्रीय अधिकार प्राप्त समिति (सीईसी) एक राष्ट्रीय स्तर की संस्था है जो पर्यावरण संरक्षण से संबंधित सर्वोच्च न्यायालय के आदेशों के कार्यान्वयन की निगरानी करती है।
- यह पर्यावरण संरक्षण से संबंधित न्यायालय के आदेशों और निर्देशों के अनुपालन की निगरानी के लिए 9 मई 2002 को भारत के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा स्थापित विशेषज्ञों का एक पैनल है।
- अगस्त 2023 में, सुप्रीम कोर्ट ने सरकार को CEC को एक स्थायी निकाय बनाने की अनुमति दी।
- पर्यावरण की सुरक्षा में इसकी प्रभावशीलता में सुधार के लिए 8 दिसंबर, 2023 को इसका पुनर्गठन किया गया था।
- यह विशेषज्ञों और अधिकारियों के एक समूह से बना है, जिसमें सेवानिवृत्त आईएएस और वन सेवा अधिकारी, पर्यावरणविद् और कानूनी विशेषज्ञ शामिल हैं।
- सदस्यों को केंद्र सरकार द्वारा तीन साल के कार्यकाल के लिए नामित किया जाता है।

Face to Face Centres





13 May, 2024

साहित्य अकादमी फ़ेलोशिप



हाल ही में एक प्रख्यात लेखक रस्किन बॉन्ड को उनके मसूरी स्थित आवास पर साहित्य अकादमी फ़ेलोशिप से सम्मानित किया गया है।

साहित्य अकादमी फ़ेलोशिप के बारे में:

- साहित्य अकादमी फ़ेलोशिप जीवित लेखकों के लिए भारत का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान है, जो साहित्य अकादमी, भारत की राष्ट्रीय पत्र अकादमी द्वारा दिया जाता है।
- फ़ेलोशिप में 3 लाख रुपये का नकद पुरस्कार, एक तांबे की पट्टिका और एक शॉल शामिल है।
- यह फ़ेलोशिप 1968 में स्थापित की गई थी, जिसमें डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन पहले निर्वाचित फ़ेलो थे।
- साहित्य अकादमी एक पुरस्कार भी देती है जो ज्ञानपीठ पुरस्कार के बाद भारत का दूसरा सबसे बड़ा साहित्यिक सम्मान है।
- पुरस्कार के लिए पात्र होने के लिए, एक लेखक को भारतीय होना चाहिए और उनका काम उनकी भाषा और साहित्य में उत्कृष्ट योगदान होना चाहिए।

PS4 इंजन



हाल ही में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) ने तमिलनाडु के महेंद्रगिरि में न्यूलिक्विड रॉकेट इंजन (PS4 इंजन) का सफल परीक्षण किया है।

PS4 इंजन के बारे में:

- PS4 इंजन भारत के ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (PSLV) का एक महत्वपूर्ण घटक है।
- यह चौथे चरण की प्रणोदन प्रणाली के रूप में कार्य करता है जो उपग्रहों को उनकी इच्छित कक्षाओं में स्थापित करने के लिए जिम्मेदार है।
- यह एक बाइप्रोपेलेंट संयोजन पर काम करता है जिसमें ऑक्सीडाइज़र के रूप में नाइट्रोजन टेट्रोक्साइड (N₂O₄) और ईंधन के रूप में मोनोमिथाइल हाइड्राज़ीन शामिल होता है।
- भागों की संख्या 14 से घटाकर एक टुकड़ा कर दी गई है, जिससे 19 वेल्ड जोड़ समाप्त हो गए हैं।
- PS4 इंजन का निर्माण एडिटिव मैनुफैक्चरिंग तकनीक का उपयोग करके किया जाता है, जिसे 3D प्रिंटिंग के रूप में भी जाना जाता है।
- PS4 चरण में अपने प्रारंभिक कार्य के अलावा, इंजन PSLV के पहले चरण (PS1) के रिप्लेशन कंट्रोल सिस्टम (RCS) को भी शक्ति प्रदान करता है।
- मेटल पाउडर की खपत 565 किलोग्राम से घटाकर 13.7 किलोग्राम प्रति इंजन कर दी गई है।
- उत्पादन समय में 60% की कमी की गई है, जो विनिर्माण दक्षता में वृद्धि का संकेत है।

मैग्पाइज



मैग्पाइज के बारे में:

- मैग्पाइज लंबी पूंछ, काले और सफेद पंख और शोर मचाने वाले तथा जिज्ञासु स्वभाव वाले पक्षी हैं।
- ये कोरविडे परिवार से संबंधित हैं, जिसमें कौवे जैसे और कौवे शामिल हैं।
- कई निकट संबंधी ब्लू मैग्पाइज प्रजातियाँ आमतौर पर कश्मीर से म्यांमार तक पाई जाती हैं।
- गोल्ड-बिल्ड मैग्पाइज, रेड-बिल्ड मैग्पाइज और ब्लू मैग्पाइज अलग-अलग ऊंचाई वाले क्षेत्रों में रहते हैं।
- उदाहरण के लिए, सोने की चोंच वाला मैग्पाइज उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों में रहता है, जबकि नीला मैग्पाइज मानव बस्तियों के पास कम ऊंचाई पर रहता है।
- पीले चोंच वाले नीले मैग्पाइज कबूतर के आकार के पक्षी हैं जिनकी विशिष्ट लंबी पूंछ होती है, जो विशिष्ट उड़ान पैटर्न प्रदर्शित करते हैं।
- ये सर्वाहारी और मैला ढोने वाले जानवर हैं जो जंगली फल, अनाज, टिड्डे और भ्रूंग खाते हैं।
- उनके पास हरे, नीले, काले और सफेद पंख, काले पैर और 52-60 सेमी का पंख होता है।
- पश्चिमी सिक्किम में गोचे ला दर्रे के पास कंचनजंगा से ट्रेकिंग कॉरिडोर, पीले और लाल बिल वाले मैग्पाइज के प्रमुख दर्शन प्रदान करता है।

सुर्खियों में स्थल सुरजीत पातर



सुरजीत पातर (14 जनवरी 1945-11 मई 2024)

प्रसिद्ध पंजाबी लेखक और कवि सुरजीत पातर का जन्म पंजाब के जालंधर में हुआ था।

योगदान:

- सुरजीत पातर की उल्लेखनीय काव्य कृतियों में "हवा विच लिखे हर्फ", "हनेरे विच सुलगदी वरनमाला", "पतझर दी पाजेब", "लफजान दी दरगाह" और "सुरजमीन" शामिल हैं।
- उन्होंने पंजाब कला परिषद के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया।
- उन्होंने पंजाबी फिल्मों शहीद उधम सिंह और विदेश के लिए संवाद लिखे।

पुरस्कार और सम्मान:

- सुरजीत पातर को 1993 में हनारे विच सुलघड़ी वरनमाला के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- उन्हें 2012 में साहित्य और शिक्षा के लिए पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

Face to Face Centres





13 May, 2024

सुर्खियों में स्थल

नेपाल

हाल ही में, नेपाल के प्रसिद्ध पर्वतारोही कामी रीता शेरपा ने माउंट एवरेस्ट पर सबसे अधिक बार चढ़ने का अपना रिकॉर्ड तोड़कर इतिहास रच दिया क्योंकि उन्होंने 29वीं बार दुनिया की सबसे ऊंची चोटी पर चढ़ाई की।

नेपाल (राजधानी: काठमांडू)

अवस्थिति : नेपाल दक्षिण एशिया में एक भूमि से घिरा देश है।

राजनीतिक सीमाएँ: नेपाल की सीमाएँ भारत (पूर्व, पश्चिम और दक्षिण) और चीन का तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र (उत्तर) से लगती हैं।

भौतिक विशेषताएँ:

- दुनिया की सबसे ऊंची चोटी, माउंट एवरेस्ट (8,848 मीटर), जिसे नेपाली में सागरमाथा और तिब्बती में चोमोलुंगमा भी कहा जाता है, हिमालय में नेपाल-चीन सीमा पर स्थित है।
- नेपाल की प्रमुख नदियों में कोशी, गंडकी और करनाली शामिल हैं, जो हिमालय से निकलती हैं और देश से होकर दक्षिण की ओर प्रवाहित होती हैं।
- नेपाल में चूना पत्थर, लौह अयस्क, तांबा, कोयला, अभ्रक, क्वार्ट्ज और मैनेसाइट जैसे खनिज हैं।

अंतर्राष्ट्रीय संबंध: नेपाल विभिन्न देशों के साथ राजनयिक संबंध रखता है और संयुक्त राष्ट्र (यूएन) और दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का सदस्य है।



POINTS TO PONDER

- हाल ही में, किस संगठन ने महिलाओं के खिलाफ हिंसा से निपटने के लिए इनएगुरल (inaugural) कानून बनाया? – यूरोपीय संघ (यूरोपीय संघ)
- हाल ही में, किस संगठन ने 2024 के लिए आधुनिक आहार आदतों के साथ संरेखित करने के लिए भारतीयों के लिए अद्यतन आहार दिशानिर्देश जारी किए? – भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICMR)
- हाल ही में खबरों में आई हिंडन नदी, किस नदी की सहायक नदी है? – यमुना
- हाल ही में सुर्खियों में आया सोनाई रूपाई वन्यजीव अभयारण्य किस राज्य में स्थित है? – असम
- महामत इदरीस डेबी को हाल ही में किस अफ्रीकी देश के राष्ट्रपति के रूप में चुना गया है? – चाड

Face to Face Centres

